IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

आदिवासी कहानियों में चित्रित आदिवासी स्त्रियों की सामाजिक स्थिति : उनकी स्वत्रंत्रता एवं परतंत्रता

दीप्ति प्रिया कुजूर
शोधार्थी
कूचबिहार पंचानन बर्मा, विश्वविद्यालय
कूच बिहार, पश्चिम बंगाल

शोध-सार-
भारत विविधताओं का देश है । इस देश में असंख्य धर्म, जाति और समुदाय के लोग निवास करते हैं । आदिवासी समाज भी भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग है । आदिवासी इस देश के मूलनिवासी हैं । ये बरसों से दुर्गम स्थानों, जंगलों में रहते आए हैं, सारे जंगल और जंगल की सम्पत्ति इनकी ही है । पर भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में आदिवासियों के जंगल, उनकी सम्पत्ति, उनके घर सब छिन गए हैं । आज उनकी स्थिति दयनीय व सोचनीय है । आदिवासी कहानी आदिवासी जीवन की समस्याओं को, उनके जीवन दर्शन को हमारे सामने पूरी प्रखरता से रखती है । शब्दों में अपार शक्ति होती है । कहानी के माध्यम से कहानीकारों ने अपनी स्वानुभूति और सहानुभूति के द्वारा आदिवासी जीवन से पाठक वर्ग का साक्षात्कार कराया है । साथ ही आदिवासी समाज में आदिवासी स्त्री की महत्वपूर्ण भूमिका, उसके महत्वपूर्ण योगदान को भी दर्शाया है । आदिवासी स्त्रियाँ समाज की अन्य स्त्रियों की तुलना में अधिक स्वतंत्र होती हैं । पर कई कारण ऐसे भी हैं जो उन्हें परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ते हैं । इस शोध आलेख में आदिवासी कहानियों के माध्यम से आदिवासी स्त्रियों की सामाजिक स्थिति, उनकी सामाजिक स्वत्रंत्रता और परतंत्रता को दर्शाया गया है ।

बीज शब्द- आदिवासी कहानी, आदिवासी स्त्री की स्वत्रंत्रता, प्रकृति प्रेम, घोटुल, स्वच्छंदता, फुटबाल, विस्थापन, पलायन, बलात्कार, डायन, नशा, आदिवासी स्त्री की परतंत्रता ।

मूल-आलेख

आदिवासी स्त्रियाँ नदी की तरह चंचल, गतिशील एवं शीतल होती हैं । उनका मन और हृदय फूल की तरह कोमल होता है । वे कर्मठ, आत्मविश्वास से परिपूर्ण और साहसी होती हैं । वे घर के आँगन के बीचों-बीच खड़े उस वृक्ष के समान हैं जो अपनी जड़ मजबूत किए हुए हर मौसम में खड़ा रहता है । जिस तरह पेड़ ठिठुरने वाली ठंड को, सूरज की आग के समान तपती धूप को, मूसलाधार बारिश को सहकर अडिग खड़ा रहता है, आदिवासी स्त्री की भूमिका भी अपने घर-परिवार, अपने समाज में कुछ ऐसी ही है । वे इतनी धैर्यवान होती हैं कि हर अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थिति में संयम बनाकर उसका मुक़ाबला डटकर करती हैं । परिवार उनके लिए स्वंय से ज्यादा महत्व रखता है । वे अपने परिवार की सुरक्षा के लिए हमेशा समर्पित रहती हैं । आदिवासी समाज में साल के वृक्ष का धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण स्थान है । आदिवासी स्त्रियाँ भी अपने समाज का वही मजबूत एवं महत्वपूर्ण साल का वृक्ष हैं । वे बहुत सहनशील होती हैं, बहुत विनम्र होती हैं और परिवार की मजबूत नींव होती हैं । आदिवासी रचनाकार वंदना टेटे उनके व्यक्तित्व का चित्रण करती हुई लिखती हैं-"पहाड़ी नदी की तरह चंचल, पोखरे की तरह गंभीर, घर के बीचों-बीच खड़ा मजबूत धरना या कि आर्थिक-सांस्कृतिक पौष्टिकता लिए महुआ-सी महिलाएँ अपने समुदाय की रीढ़ हैं । सरल, सहज अपने खेतों-खलिहानों, जंगल-पहाड़ों से बिंबों को चुनती-बीछती और बतियाती ।"[1] आदिवासी स्त्रियाँ प्रकृति की लय-ताल और संगीत का अनुसरण कर अपने जीवन का निर्वाहन करती हैं । प्रकृति के साथ उनका आत्मीयता का संबंध है । ये स्त्रियाँ धरती को सिर्फ संसाधन मात्र नहीं मानती बल्कि माता का रूप मानती हैं और इसीलिए उसके रचाव और बचाव के लिए हमेशा तत्पर रहती हैं । वे धनलोलुप नहीं होती और बाजारवादी हिंसा को नकारती हैं । केदार प्रसाद मीणा लिखते हैं- "आदिवासी स्त्रियाँ हमेशा से सही अर्थों में प्रेमिका, बहादुर और प्रगतिशील स्त्री रही हैं-अपने प्राकृतिक व निर्दोष स्त्रियोचित स्वभाव के साथ ।"[2] आदिवासी समाज में स्त्रियों की स्थिति सम्मानजनक रही है । उसे अपना जीवन स्वेच्छापूर्वक जीने और अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार प्राप्त हैं । केदार प्रसाद मीणा लिखते हैं- "आदिवासी स्त्री बिना प्रेम कभी किसी मर्द के साथ नहीं रहती । वह अपनी ख़ुशी से किसी दूसरे गरीब का हाथ थाम लेती है । वह कभी

किसी का शोषण करने की बात नहीं सोचती है । वह तो बस शोषण से बचना चाहती है, प्रेम व शान्ति से जीवन जीना चाहती है ।"[3] आदिवासी समाज में स्त्रियों की स्थिति वर चुनने के मामले में सम्मानजनक है । इन्हें अपना वर चुनने का पूरा अधिकार प्राप्त है । आदिवासी समाज में घोटुल प्रथा हुआ करती थी । घोटुल शिक्षा का केंद्र हुआ करता था, जहाँ पुरुष और स्त्री एक साथ रहकर ज्ञान अर्जित करते थे । स्त्री को अधिकार होता था कि वह पुरुष को जाँचे, परखे और अगर कोई पसंद आ जाए तो विवाह कर ले । इस फैसले के लिए उसे न तो दंडित किया जाता था और न कभी दोषी करार दिया जाता था । रमणिका गुप्ता के शब्दों में -"भारतीय संस्कृति के बिलकुल विपरीत, आदिवासी स्त्री को अपना वर खुद चुनने की इजाज़त है । इसके लिए न तो वह दंडित होती है और न ही दोषी करार दी जाती है । इसलिए भारत की अन्य स्त्रियों के विपरीत आदिवासी लड़कियां लड़कों को देखकर न तो मोम की तरह पिघलती हैं और न ही बर्फ की तरह पानी-पानी हो जाती हैं, बल्कि वे उनसे बतियाती हैं, परखती हैं और अगर किसी के साथ जीवन निभाने की संभावना दिखे, तो रजामंदी से ब्याह भी कर लेती हैं । पति से न पटने पर उसे छोड़ने का अधिकार भी उन्हें प्राप्त है ।"[4] स्त्रियों की ऐसी स्वतंत्रता आदिवासी समाज को छोड़ अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलती । आदिवासी स्त्री अपने समाज के पुरुषों से किसी प्रकार का खतरा महसूस नहीं करती बल्कि आदिवासी पुरुषों से उसे सुरक्षा का एहसास होता है । पुरुषों के प्रति असुरक्षा का भाव उनके मन में गैर-आदिवासी पुरुषों के द्वारा ही आया । पुरुषवादी अत्याचार से उनका परिचय सर्वप्रथम गैर-आदिवासी समाज के लोगों-आर्यों द्वारा हुआ, फिर मुगलों और अंग्रेजों द्वारा हुआ और अब पूंजीपति, उदद्योगपति और दिकुओं द्वारा उन्हें लगातार शोषण का शिकार होना पड़ रहा है ।

आदिवासी कहानियाँ आदिवासी जीवन-मूल्यों, युगीन समस्याओं, समाज में स्त्रियों की स्थिति से हमारा साक्षात्कार कराती हैं । इन कहानियों में आदिवासियों की समृद्ध संस्कृति और परंपरा, प्रकृति के प्रति उनका अटूट प्रेम, शिल्प कला, उनका जीवन-दर्शन, धरती के रचाव और बचाव रूपी जीवन दृष्टि, उनके जीवन में सामूहिकता और सहभागिता की विशेषता के साथ-साथ उनके शोषण, उत्पीड़न, विस्थापन, पलायन, औरतों के साथ खिलवाड़, बलात्कार, भ्रष्टाचार, नैतिक गिरावट आदि समस्याओं का चित्रण बहुत बारीकी से किया गया है । आदिवासी कहानियों में आदिवासी स्त्रियाँ जहाँ स्वच्छंद होकर जंगलों में गीत गाती, चिड़ियों से बतियाती और महुवा चुनती दिखाई देती हैं वहीं समाज में शोषण का शिकार होती और परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी भी दिखलाई पड़ती हैं । ये स्वतंत्र भी हैं और कई मामलों में पराधीन भी ।

आदिवासी स्त्रियों की स्वत्रंत्रता-

आदिवासी समाज में स्त्रियाँ भारत की अन्य स्त्रियों के मुक़ाबले अधिक स्वतंत्र एवं स्वछंद होती हैं । ये स्त्रियाँ मेहनती और ईमानदार होती हैं । परिवार या समाज इनके लिए प्रथम स्थान रखता है । ये निडर होकर अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए कृतसंकल्प रहती हैं । आदिवासी कहानीकार वाल्टर भेंगरा 'तरुण' की कहानी 'दुलारी' स्वच्छंदता का प्रतीक माने जाने वाली कहानी है । कहानी की पात्र दुलारी शिक्षित युवती होने के कारण आदिवासियों की लाह बेचने के मामले में व्यापारियों की धोखाधड़ी का पर्दाफाश करती है । वह बनिए से कहती है-" देखिये, आप भी खुद पढ़कर देख लीजिए । देख लीजिए, बाजार भाव कैसा चल रहा है ? इसमें स्पष्ट लिखा है लाह का खरीद भाव चालीस से पैंतालीस रुपये प्रति किलोग्राम है । अगर आपको मुनाफे के साथ अपना खर्च भी निकालना है, तो इस बाजार में लाह की कीमत पैंतीस से चालीस रुपये होनी चाहिए।"[5] बनिए के द्वारा क्रोध से कहने पर की आप कौन होती हैं हमें बाजार का भाव समझाने वाली ? तब वह निडर हो उत्तर देती है-"हम गाँव वालों के कारण ही आप इस बाजार में हैं । क्या समझे आप ? दुलारी भी गुस्से से बोली । हमें और अधिक बेवकूफ मत बनाओ । अब और लूट नहीं सकते हैं आप हमें ।"[6] दुलारी की इस सजगता के कारण व्यापारियों के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश हो सका और उसने गरीब आदिवासियों को लुटने से बचा लिया । ये कहानी पढ़ी-लिखी आदिवासी स्त्रियों के स्वत्रंत्र रूप से अन्याय के खिलाफ लड़ने की आजादी का परिचय देती है ।

आदिवासी स्त्रियों का मन कोमल होता है । वह स्वतंत्र विचारों की होती है । यें छल-कपट से दूर एक दूसरे की मदद करने में विश्वास रखती हैं । प्रकृति के समान इनकी प्रवृति होती है सबके लिए समान भाव ।'संवेदना' कहानी की पात्र विद्या की साफ नीयत की ओर इशारा करती हैं । विद्या किचन ट्रॉली और फर्नीचर खरीदने के लिए पैसे बचाती है । उसका पति विनय कुमार मीणा उसे बताता है कि साइकिल पर सवार एक दंपत्ति रास्ते से जा रहे थे । अचानक पीछे की सीट पर बैठी स्त्री को चक्कर आ गया और वह गिर गयी जिससे उसे सिर पर काफी चोट आई । इसलिए वह बेहोश हो

गयी । उसके पति विनय कुमार मीणा ने उनकी मदद करते हुए उन्हें अस्पताल पहुँचाया जहां डॉक्टर ने एपिलेप्सी के लक्षण बताए और तुरंत उस बीमार स्त्री के पति हो अस्पताल का बिल एडवांस भरने की सलाह दी, परंतु उस स्त्री के पति के पास अस्पताल का बिल भरने के पैसे नहीं थे । ये दंपत्ति किसी देहात से काम की तलाश में शहर आए थे । हमदर्दी जताने हुए विनय कुमार मीणा जेब से रुपए निकाल कर एडवांस के पैसे जमा कर देते हैं । जब यह बात विद्या को पता चलती है तो वह अपने पास रखे सारे पैसे इलाज के लिए दे देती है । पति द्वारा पूछे जाने पर कि ये तो तुम्हारे किचन ट्रॉली और फर्नीचर के लिए हैं । इसे हम कैसे खर्च कर सकते हैं ? विद्या उत्तर देती है-"जी नहीं ! फर्नीचर से ज्यादा जरूरी है किसी की बेशकीमती जिंदगी बचाना । फर्नीचर तो हम कभी भी बना सकेंगे, लेकिन कोई इस वक़्त इन रुपयों से बच जाता है, तो इससे बड़ी खुशी की बात मेरे लिए क्या हो सकती है ?"[7] विद्या द्वारा कही गयी ये पंक्तियाँ इस बात को स्पष्ट करती हैं कि आदिवासी समाज में स्त्रियों को इतनी स्वतंत्रता मिली है कि वह किसी की सहायता कर सकती है । अपने मन की इच्छाओं को मुक्त स्वर से अभिव्यक्त कर सकती हैं । पुरुष उन्हें समाज में अभिव्यक्ति की पूरी आजादी देता है ।

आदिवासी लड़कियाँ प्रतिभा सम्पन्न होती हैं । वे कर्मठ होती हैं और खेलों के प्रति उनमें लगाव देखा जाता है । आदिवासी समाज लड़कियों को यह स्वतंत्रता देता है कि वह अपनी रुचि के अनुसार खेल का चुनाव कर सके और प्रतियोगिता में भाग ले सके । कहानीकार रोज केरकेट्टा की कहानी 'प्रतिरोध' फुटबाल खेल के प्रति भालूबासा राजाबासा गाँव की लड़कियों की मेहनत, लगन और जुनून को दर्शाती है । लड़कियाँ दातुन-दोना बेचने का काम करतीं, घर का काम करतीं और दोपहर में फुटबाल खेलने के लिए समय भी निकाल लेतीं । वे साड़ियाँ पहन कर मैदान में उतरती थीं । उनका खेल देखने बच्चे-बूढ़े, लड़के सब आने लगे, मज़ाक भी बना पर अंततः प्रोत्साहन भी मिला । "बातें बूढ़े-बूढ़ियों के कानों तक पहुँचीं, वे भी खेल देखने आ गए । अपने ही गाँव की बेटियों को मैदान में दौड़ते देख थोड़ा हँसे, प्रफुल्लित हुए । नाराज कम हुए, डाँटा बिल्कुल नहीं । वे तो हैरत में थे कि उनके गाँव की बेटियाँ ऐसा भी सोच सकती हैं ।...... हम लोगों ने भी ध्यान नहीं दिया, जमाना बदल गया है । हमें अपना व्यवहार बदलना पड़ेगा । ये लोग शहर जाती हैं, प्रतिदिन देखती हैं कि लड़कियाँ पढ़ती हैं, पढ़ाती हैं । शहर से कुछ अच्छा सीखकर आती हैं तो अच्छी बात है, हमारा गाँव आगे बढ़ेगा ।"[8] गाँव वालों की ऐसी सोच दर्शाता है कि आदिवासी समाज में लड़के और लड़कियों में भेद-भाव नहीं किया जाता । लड़कों की तरह लड़कियों को भी आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ।

सामूहिकता, समानता और सहभागिता आदिवासी समाज की विशेषता है । आदिवासी समाज में स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों में काफी खुलापन रहा है । आदिवासी स्त्रियाँ हर पर्व, हर त्योहार में पुरुषों के साथ शामिल होती हैं। साथ में खाना-पीना, साथ में गीत गाना और साथ में नृत्य करना इनकी संस्कृति का अभिन्न अंग है । कहानीकार रोज केरकेट्टा अपनी कहानी 'भँवर' में लिखती हैं- "उस दिन मौसम भी थोड़ा साथ दे रहा था । चाँद की रोशनी बादलों के कारण कभी चटक हो उठती तो कभी मद्धिम पड़ जाती । स्त्रियाँ, युवतियाँ और बच्चे खुलकर अपनी उमंग प्रदर्शित कर रहे थे । उपवास रखनेवाली युवतियाँ उस दिन का विशेष आकर्षण थीं । रामेश्वर बड़ाईक के आँगन में 'करम पूजा' का आयोजन था । उन्हीं के आँगन में यह चहल-पहल थी ।"[9] सभी पर्व त्योहार में महिलाओं की भागीदारी समान रूप से होती हैं ।

आदिवासी स्त्रियों की परतंत्रता-

आदिवासी कहानियाँ आदिवासी स्त्री की दशा को चित्रित करती हैं । आदिवासी स्त्रियों को सबसे ज्यादा खतरा आदिवासी समाज से न होकर बाहरी समाज से ही रहा है । गैर-आदिवासी पुरुषों ने हमेशा से इनका शोषण ही किया, बलात्कार किया है । ये स्त्रियाँ इनके लिए सिर्फ भोग की वस्तु रही हैं । स्वभाव से सीधा-सादा, सरल और मासूम होना कई बार आदिवासी स्त्रियों के लिए अभिशाप बन कर सामने आया है। गैर-आदिवासी पुरुषों ने इन स्त्रियों की मासूमियत का फायदा उठाकर इनका पुरजोर दैहिक शोषण किया है । फादर पीटर पॉल एक्का की कहानी 'राजकुमारों के देश में' विस्थापन की भयावहता को तो व्यक्त करती ही है साथ-साथ मुखिया, ठेकेदार, सरपंच और पुलिस के घिनौने चेहरे को भी उजागर करती है । इन हैवानों ने गाँव की लड़कियों, बहुओं, बेटियों का जीना हराम कर रखा था । "मंगलू काका के मेला जाने पर उस रात- पूरन पंडित, पटेल साव, दारोगा बाबू-एक साथ उस छोटी, मासूम, पवित्र, बेफिक्र झोपड़ी तक चले आए थे । जंगली जानवर और भी वहशी हो गए थे और गाँव वाले जानते हुए भी नहीं देखने-सुनने का बहाना कर रहे थे । उसकी छोटी सी दुनिया लुट

गयी थी ।"[10]

आदिवासी समाज में आदिवासी स्त्रियों की विपन्नता का एक और कारण है- अंधविश्वास । इस अंधविश्वास ने कई स्त्रियों का जीवन नर्क बना दिया है । उन्हें डायन कह कर समाज से बहिष्कृत किया जाता रहा है । कई मामले ऐसे भी रहे हैं जिसमें स्त्रियों को पत्थरों से मार-मार कर मौत के घाट उतार दिया गया है । आदिवासी कहानी इस अंधविश्वास के कारण समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति को दर्शाती है । इस अंधविश्वास के कारण कई परिवार बर्बाद हो हुए हैं । आदिवासी कहानीकार वाल्टर भेंगरा 'तरुण' की कहानी 'डायन' में सादो का परिवार गाँव छोड़ भागने को मजबूर हो जाता है । गाँव वाले सादो के घर के बाहर शोर करते हुए कहते है-" बाहर निकालो बुढ़िया डायन को !.....अभी बाहर निकालो !.....पूरे गाँव को बर्बाद कर रही है, डायन नजोम कहीं की |"[11] सादो के पूछने पर कि क्या किया मेरी माँ ने ? गाँव वालों की भीड़ कहती है -"क्या नहीं किया, तुम्हारी माँ ने । डायन है वह डायन । जिसे देख लेती है वही सिंगबोंगा के पास चला जा रहा है । परसों मागो का बैल मर गया । कल बुदू की बेटी मर गयी । और आज सिंगराय भी चल बसा । तुम्हारी माँ के कारण हो रहा है ये सब ।"[12] पंचायत का भी यही फैसला होता है कि या तो सादो अपनी माँ को मार दे और अगर वह ऐसा नहीं कर पाता है तो गाँववाले मिलकर उसकी माँ को मार डालेंगे । उसी रात को भारी मन से सादो अपनी पत्नी पालो, दो बच्चों और अपनी बूढ़ी लाचार माँ को पीठ में उठाकर गाँव छोड़ देता है । क्योंकि वो जनता है कि अगर उसने गाँव नहीं छोड़ा तो सुबह गाँववाले अंधविश्वास से ग्रसित हो कर उसकी माँ को मार डालेंगे ।

आदिवासी समाज में बाँझ होना भी स्त्री जीवन का अभिशाप है । कहानीकार मंजु ज्योत्सना की 'प्रायश्चित' कहानी की स्त्री को बाँझ होने के कारण समाज में उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है । सिर्फ परिवार और समाज के ही ताने नहीं सुनने पड़ते बल्कि पति से मार भी खानी पड़ती है । डोमना नशे में धुत्त होकर घर आता है और अपनी पत्नी को बेतहाशा पीटने लगता है । कुछ देर मार सहने के बाद वह विरोध भी करती है पर अंततः समाज की उपेक्षा और पति के अमानवीय व्यवहार से त्रस्त हो कीटनाशक दवा पीकर अपनी जान दे देती है । डोमना की तरह ही कई पुरुष अपनी स्त्री के बाँझ होने पर उसके जान के दुश्मन बन जाते हैं । कई स्त्रियाँ डोमना की पत्नी की तरह चुपचाप मार सहती हैं परंतु जब बात हद से आगे बढ़ जाती है तब वे जीवन से हताश-निराश हो आत्महत्या का रास्ता चुन लेती हैं ।

घरेलू नौकरानियों के रूप में आदिवासी लड़कियों को खरीदने-बेचने का एक नया धंधा आजकल शहरों में देखने को मिल रहा है । कहीं नौकरी दिलाने के नाम पर, प्लेसमेंट के बहाने रोज आदिवासी लड़कियों को खरीदा और बेचा जा रहा है । आदिवासी अधिकार कार्यकर्ता और लेखक ग्लैडसन डुंगडुंग की कहानी 'सेरगाखोड़ी के दिल्ली रिटर्न' में दिल्ली जैसे महानगरों की चकाचौंध में बर्बाद होती आदिवासी लड़कियों के अभिशप्त जीवन की करुण दास्तां प्रस्तुत की गयी है । दलाल सेरगाखोड़ी नामक गाँव से दर्जनों आदिवासी लड़कियों को सपने दिखा कर दिल्ली ले जाते हैं जहां वे घरों में बर्तन धोने, झाड़ू पोछा करने, खाना बनाने, बच्चे संभालने का काम करती हैं । वहाँ उनके साथ आर्थिक शोषण के साथ-साथ शारीरिक शोषण भी होता है । और जब वे गर्भवती हो जाती हैं तो उन्हें छोड़ दिया जाता है । ऐसे स्थिति में उन्हें वापस अपने गाँव आना पड़ता है । गाँव वापस आने पर इन लड़कियों का जीना मुश्किल हो जाता है । "दिल्ली से लौटकर घर आने वाली लड़कियों पर दिल्ली रिटर्न का टैग लग जाता था, किसी दिवालिया हुए कंपनी के प्रोडक्ट के तरह । दिवालिया कंपनी का प्रोडक्ट कोई नहीं खरीदता । दिल्ली से वापस आनेवाली लड़कियों का हाल भी कुछ ऐसा ही था । उनसे कोई लड़का शादी करना नहीं चाहता था ।"[13] यह कहानी सुमी की तरह कई अन्य लड़कियों की मार्मिक व्यथा को अभिव्यक्त करती है ।

नशा या शराब की लत एक ऐसी बीमारी है जो आदिवासी समाज को धीरे-धीरे खोखला कर रही है, बीमार कर रही है । आदिवासी समाज में महिलाओं की कमाई का अधिकांश हिस्सा घर के मुखिया कहे जाने वाले मर्द नशे में उड़ा देते हैं । घर की आर्थिक, सामाजिक स्थिति खराब होने पर स्त्रियों को काम पर जाना पड़ता है । ठेकेदार इस बात का फायदा उठाते हैं । आदिवासी स्त्रियों से जीतोड़ मेहनत करवाते हैं और पुरुष मानसिकता के कारण उन्हें कम वेतन देते हैं । उनका तर्क होता है कि महिलाएं मर्दों से कम ताकतवर होती हैं, इसीलिए कम मेहनत करती हैं, परंतु सच्चाई यह है कि ज्यादा मजदूरी के बाद भी वह मर्दों की तरह कामचोरी नहीं करती । तपती धूप, मूसलाधार बारिश और कड़ाके की ठंड में अपने बिलखते बच्चों को छोड़ पूरी ईमानदारी से मेहनत के साथ अपना काम करती हैं परंतु विडम्बना ये है कि किसी प्रकार की

दुर्घटना होने पर सरकार की तरफ से, कंपनी की तरफ से या भट्टा मालिकों की तरफ से इन्हें किसी प्रकार की सहायता या चिकित्सा की सुविधा नहीं मिलती । कहानीकार एस. इलियास की कहानी 'सूर्यास्त' शराब से बर्बाद होते परिवार और उनके अंधेरे भविष्य को दर्शाती है । वे लिखते हैं-" लड़खड़ाता हुआ अंदर घुस आया । लगता था मानो वह मुह के बल गिर पड़ेगा । वह सीधा चूल्हे के पास जा बैठा और निबन को भात परोसने का हुक्म दिया ।"[14] मिसौर की दारू पीने की आदत से परिवार में समस्याओं का अंबार लग जाता है ।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि आदिवासी कहानियों में चित्रित आदिवासी स्त्रियाँ स्वच्छंद होनी के साथ-साथ समाज के नियमों एवं नजरियों के कारण पराधीन जीवन जीने को मजबूर हैं । ये आदिवासी कहानियाँ आदिवासी समाज में स्त्रियों की स्थिति, उनकी स्वच्छंदता और परतंत्रता से हमारा परिचय कराती हैं । उन्मुक्त वातावरण में विचरण करने वाली ये स्त्रियाँ समाज की दक़ियानूसी बातों में आकर अपनी आजादी खो देती हैं । आज जरूरत है एक नए नजरिए की, नए विचारों की ताकि आदिवासी स्त्रियाँ तितली के समान खुले आसमान में निडर हो अपने पंख फैलाकर उड़ सकें । डॉ. अर्जुन चव्हाण लिखते है-" आदिवासी महिलाएँ भी बेहतर जीवन के सपनों को सजाती हैं, परिश्रम करती हैं और अस्तित्व बोध एवं चेतना से युक्त दिखाई देती है ।" [15]

संदर्भ-:

1. टेटे, वंदना, वाचिकता, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2020, पृ.-53
2. मीणा, केदार प्रसाद, आदिवासी प्रतिरोध, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2016, पृ.17
3. वही, पृ.18
4. गुप्ता, रमणिका, आदिवासी अस्मिता का संकट, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण: 2019, पृ.75
5. भेंगरा, वाल्टर, जंगल की ललकार (कहानी-संग्रह), सत्य भारती प्रकाशन, रांची, झारखण्ड, प्रथम संस्कारण: 1989, पृ.172
6. वही, पृ.172
7. डॉ.गव्हाडे, भगवान, एकलव्य का अंगूठा(कहानी-संग्रह), ए.आर. पब्लिशिंग, दिल्ली, संस्करण: 2019, पृ. 74
8. केरकेट्टा, रोज, बिरुवार गमछा तथा अन्य कहानियाँ(कहानी-संग्रह), प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्कारण: 2017, पृ.33-34
9. केरकेट्टा, रोज, पगहा जोरी-जोरी रे घाटो(कहानी-संग्रह), प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण: 2019, पृ. 13
10. एक्का, पीटर पॉल, परती जमीन(कहानी-संग्रह) सत्य भारती प्रकशन, रांची, झारखण्ड, पृ. 65
11. भेंगरा, वाल्टर, विकल्प(कहानी-संग्रह), अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण: 2020, पृ. 71
12. वही, पृ. 71
13. डुंगडुंग, ग्लैडसन, असुरों की पीड़ा(कहानी-संग्रह), आदिवासी पब्लिकेशन्स,कोकर, रांची, प्रथम संस्करण: 2020, पृ. 155
14. गुप्ता, रमणिका, पूर्वोत्तर आदिवासी कहानियाँ, पृ.-166
15. चव्हाण, डॉ.अर्जुन, विमर्श के विविध आयाम, वाणी प्रकाशन,नयी दिल्ली, संस्करण-2008, पृ. 187